

दिंगाष्टकम्

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितदिंगम् निर्मलभाषितशोभितदिंगम्	।
जन्मजदुःखविनाशकदिंगम् तत्प्रणामामि सदाशिवदिंगम्	॥ १ ॥
देवमुनिप्रवरार्चितदिंगम् कामदहम् क्रुशाकरदिंगम्	।
रावणदर्पविनाशनदिंगम् तत्प्रणामामि सदाशिवदिंगम्	॥ २ ॥
सर्वसुगन्धिसुलेपितदिंगम् बुद्धिविवर्धनकारणदिंगम्	।
सिद्धसुरासुरवन्दितदिंगम् तत्प्रणामामि सदाशिवदिंगम्	॥ ३ ॥
कनकमहामणिभूषितदिंगम् इण्डिपतिवेषितशोभितदिंगम्	।
दक्षसुयज्ञविनाशनदिंगम् तत्प्रणामामि सदाशिवदिंगम्	॥ ४ ॥
कुमकुमचन्दनलेपितदिंगम् पञ्चजहारसुशोभितदिंगम्	।
सन्यतपापविनाशनदिंगम् तत्प्रणामामि सदाशिवदिंगम्	॥ ५ ॥
देवगणार्चितसेवितदिंगम् भावैर्भक्तिभिरेव च दिंगम्	।
दिनकरकोटिप्रभाकरदिंगम् तत्प्रणामामि सदाशिवदिंगम्	॥ ६ ॥
अष्टदशोपरिवेषितदिंगम् सर्वसमुद्वेकारणदिंगम्	।
अष्टदरिद्रविनाशनदिंगम् तत्प्रणामामि सदाशिवदिंगम्	॥ ७ ॥

सुरगुरुसुरवरपूजितलिंगम्
सुरवनपुष्पसदारचितलिंगम् ।
परात्परम् परमात्मकलिंगम्
तत्प्रशामामि सदाशिवलिंगम् ॥ ८ ॥

लिंगाष्टकमिदम् पुण्यम् यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥
